

gen: य एतानानिपद्वाष्टान् MBh. 3, 539. — 6) *anshängen*: वाताकृतेत्स-
वान्निपत्ताक्रान्तिप्रसङ्गिभिः VID. 33. — 7) *hineinlegen, hineinstecken*: तस्मि-
न्विचु ब्रूतं वान्निपेत् Suçr. 2, 193, 21. 355, 15. आनिपत्तमूत्रा मणयः MBh. 3, 3094.
अज्ञेशलभ्या हि बन्धुयुतमार्था मकृत्तनाम्। जन्मात्तराजिताः स्फारसंस्का-
रान्निपत्सिद्धयः (?) || KATH. 5, 19. — 8) *hinweisen, auf Etwas hindeuten, andeuten* SÂH. D. 12, 3. SIDDH. K. zu P. 6, 3, 34. Sch. zu KÂTJ. Çr. 1, 4, 5, 6. —
9) *zurückweisen, auf Etwas nicht achten*: तस्यास्तदन्निप्य वचे क्लिप्तमुक्तं
MBh. 3, 16117. AMAR. 79. *als unrichtig zurückweisen*: स्वात्तमानिप-
ति Sch. zu ÇÂK. (ed. WILL.) 24, 1. — 10) *verhöhnern, verspotten*: कीना-
ज्ञानतिरिक्ताङ्गान् u. s. w. नानिपेत् M. 4, 141. MBh. 3, 15637. R. 3, 43, 1.
आत्मानं पुनरानिपामि ÇÂNTI. 1, 18. (मेरुम्) आनिपत्तं प्रभो भानोः MBh. 1,
1103. (दमयन्तीम्) आनिपत्तीमिव प्रभो शशिनः स्वेन तेजसा 3, 2147. *iro-
nisch sagen* Sch. zu ÇÂIM. 1, 23. — *caus. umwerfen lassen*: रथमनिपया-
मास गजेन MBh. 3, 15733. — Vgl. आनिपे fgg.

— पर्या *umwinden*: केशान्तम् — पर्यानिपडुद्वाब्धं दूर्वावता पाण्डुम-
धूकदाम् KUMÂRAS. 7, 14.

— व्या 1) *ausstrecken, ausrecken, aufsperrn*: भीमसेनाय व्यानिपत्त-
कृत्सा कर्म MBh. 3, 566. शाखाव्यानिपत्तवदनं 1, 1402. — 2) *abschiessen*
(den Bogen): अथिष्यं तरसा कृत्वा गाण्डीवं व्यानिपदन्तुः MBh. 4, 1423. 1959.
— 3) *mit sich fortziehen, fesseln, in Beschlag nehmen* (das Gemüth): संप्र-
पुडै हि तौ दृष्ट्वा वलिनौ रामरावणौ। व्यानिपत्तकृत्वाः सर्वे परं विस्मय-
मागताः || R. 6, 91, 3. व्यानिपत्तमनस् PÂÑKÂT. 117, 14.

— समा 1) *zusammenwerfen, aufhäufen*: वाससां तत्र राशिं समानिपत्
MBh. 1, 156. — 2) *fortschleudern, mit Gewalt von sich stossen, mit Unge-
stüm ausstrecken, — vorstrecken, — ausstossen*: तया समानिपत्ततनुः स
पापः पपात शाखीव निक्तमूलः MBh. 3, 15662 = 4, 459. न चोष्ठौ न भूतौ
ज्ञानं न च वाक्यं समानिपेत्। सदा वातं च वाचं च छीवनं चाचरेच्छ्वैः ||
117. *hinauswerfen, hinausjagen*: रात्र्यादाश्रु समानिपन् 2, 1019. — 3) *her-
abwerfen, herabreissen*: समानिप्य रथात्तस्मात्सारथिम् R. 3, 36, 50. शाखां
चन्दनवृत्तस्य समानिप्य 4, 7, 14. द्रौपद्या वसनं वलात्। सभामध्ये समानि-
प्य MBh. 2, 2290. — 4) *zu Grunde richten, vernichten*: समानिपन्मानुमतः
प्रभो मुकुत्त्वमतकः MBh. 1, 1253. 14, 162. — 5) *verhöhnern, verspotten*
MBh. 1, 1677.

— उद् 1) *hinaufwerfen, hinaufheben, hinauftreiben, aufheben, aufrich-
ten, aufsetzen*: वलिमाकाश उन्निपेत् M. 3, 90. शैलानां शिखराणि — ऊ-
र्ध्वमुन्निप्य R. 4, 8, 5. यत्नोत्तिष्ठोपलाः 5, 64, 24. पवनवेगोत्तिष्ठसंश्रुष्काप-
णाः R. 1, 22. गन्धो ऽयं पवनोत्तिष्ठः R. 3, 16, 7. शिर उन्निप्य नागस्य
पुनः पुनरुत्तिष्ठत् MBh. 1, 1126. (रत्नसः) उन्निप्याधामयेद्वम् 6031. द-
ण्डमुन्निपति P. 1, 1, 36. Sch. बाहू R. 2, 57, 25. भूतौ 6, 94, 10. करे वामम्
KATH. 11, 69. पदौ PÂÑKÂT. 1, 357. उन्निपत्तम् MBh. 3, 11187. उन्निप्य
भूनेः *von der Erde aufhebend* DAÇAK. in BENF. Chr. 196, 21. घटे तस्याः
स्कन्धोत्तिष्ठे *auf die Schulter gehoben* VID. 293. 297. नागफणोत्तिष्ठसिं-
हासननिपेडुपी RAGH. 13, 83. मध्यमेन च गुल्मेन रत्निभिः सा सुरजिता। उ-
त्तिष्ठगुल्मेश्च *auf Höhen aufgestellt* (?) MBh. 3, 646. — MBh. 3, 11186.
Suçr. 1, 118, 1. 2, 29, 5. 92, 12, 13. 199, 19. 211, 7. 337, 3. MĀKĀH. 84, 5.
PÂÑKÂT. 187, 23. ÇÂK. 126. 167. RAGH. 6, 14. VID. 292. BHĀG. P. 3, 13, 27.
VOP. 21, 17. BHATT. 3, 34. 4, 2. 14, 107. 13, 34, 44. — 2) *von sich werfen, sich von Etwas befreien*: संसारडुःखं वद्विहृत्तिपति BHĀG. P. 3, 3, 38.

भूतादिना तन्मात्राण्युत्तिप्य 4, 23, 17. — Vgl. उन्निपत्, उन्निपे u. s. w.

— समुद् 1) *hinaufwerfen, aufheben, hinauftreiben* MBh. 1, 1675. शि-
लाम् 3, 436. तत एनम् — बाहूभ्याम् — समुत्तिप्य 3, 11519. बाहू 2, 2307.
BENF. Chr. 18, 38. PÂÑKÂT. 43, 8. MĀKĀH. P. 18, 44, 45. (प्राणः) समुत्तिपति
पावकम् MBh. 3, 13972. — 2) *auseinanderwerfen, lösen, abwerfen*: के-
शान्समुत्तिप्य MBh. 4, 244. बन्धान्सर्वान्समुत्तिप्य R. 5, 36, 140. — 3) *be-
freien*: बन्धान्समुत्तिप्य PÂÑKÂT. 38, 21. — 4) *zu Grunde richten*: लङ्का-
मपि समुत्तिप्य सीतां तामकृमानये R. 5, 3, 69.

— उप 1) *schleudern auf, schwingen gegen* (loc.): वपुषि वधाय तत्र
तव शस्त्रमुपनिपतः SÂH. D. 66, 5. *hinwerfen, hinsetzen*: ततः परस्तालो-
कालोकनामाचलो लोकालोकयोत्तराले परित उपनिपतः BHĀG. P. 5, 20, 34.
— 2) *mit einem Schläge treffen* (vgl. unter अभि): कश्यपनिपति ÇÂT.
Br. 1, 4, 4, 15. — 3) *mit Worten Jmd verletzen*: परस्परं वागिभूषनिप-
ति (partic.) R. 5, 11, 11. — 4) *leise andeuten*: क्वं कार्यमुपनिपति MĀKĀH.
137, 13. DAÇAK. in BENF. Chr. 192, 6. — Vgl. उपनिपे fgg.

— नि 1) *niederwerfen, hinwerfen, werfen auf, niederlegen, hinsetzen, aufstellen; hineinstecken, hineinlegen*: अत्रं भूमौ अचाण्डालवायसेभ्यश्च
निनिपेत् JĀGĀ. 1, 103. MBh. 1, 1536. R. 3, 4, 13. MĀKĀH. 49, 5. AMAR. 80.
VET. 12, 9. BHĀG. P. 7, 13, 46. RĪGĀ - TAR. 5, 85, 87. मुषर्णावातनिनिपताः
(पादपाः) R. 3, 33, 20. गात्राणि कान्तामु च निनिपति 5, 11, 12. आत्मानं नि-
निपति *sich herabwerfen* PÂÑKÂT. 135, 5. तस्योपपत्तमानं निनिप्य HIT. 68,
9. नान्यतो दृष्टिं निनिपति SÂH. D. 34, 13. Gīt. 12, 1. निनिपेत्तदनुः MBh. 3,
1503. 1, 5897. 4, 169. 13, 6678. R. 3, 73, 23. 6, 96, 7. MEGH. 84. PÂÑKÂT.
96, 5. निनिप्य चरणां रत्नाक्ते मेघचर्मणि *den Fuss auf ein Widderfell stel-
lend* RĪGĀ - TAR. 5, 325. वेष्टमनि सर्वाणि निनिपेयाः MBh. 1, 5725. किर-
ण्यम् — भाण्डागारेषु निनिपेत् JĀGĀ. 1, 327. निनिपतो मञ्जुषायाम् KATH. 5,
4, 59, 56. VET. 20, 11. तीरे याचिन्वा शरवे निनिप्य PÂÑKÂT. 174, 14. ब-
लम् *ein Heer sich lagern lassen* R. 2, 91, 5. — 2) *Jmd (loc.) Etwas übergeben, zukommenlassen, hingehen*: वृद्धे पात्रेषु निनिपेत् M. 7, 99. JĀGĀ. 1, 316.
HIT. II, 7. वृद्धे दानेन निनिपेत् M. 7, 101. त्रिदण्डमेतन्निनिप्य सर्वभूतेषु
12, 11. दण्डं दण्डे *(der Strafe)* निनिपति MBh. 3, 13730. Insbes. *Jmd Etwas zur Verwahrung übergeben, Jmds Sorge anvertrauen*: यो यथा
निनिपेद्वस्ते यमर्थं यस्य M. 8, 180. तं शिशुम् — क्वस्ते निनिप्य सामन्तस-
चिवैकाङ्गतास्त्रिणाम् RĪGĀ - TAR. 5, 445. अथै निनिपे निनिपेत् M. 8, 179, 191.
निनिपत्तस्य धनस्य 196. MBh. 13, 5521. BRĀHMAN. 1, 29. निनिप्य मिथुनं
तस्याम् BRH. DEV. in Z. f. vgl. Spr. 1, 442. पुत्रेषु भार्या निनिप्य M. 6, 3.
MBh. 3, 2294. 2903. 10090. R. 2, 23, 27. RAGH. 1, 34. कर्त्तृकदमनकनिनिप-
भारः PÂÑKÂT. 31, 3. नित्यं तस्मिन्समाश्रितः सर्वकार्याणि निनिपेत् M. 7, 59.
— 3) *Jmd in eine Würde einsetzen*: रात्रि राममनिनिप्य पिता मे विनशि-
प्यति R. 2, 31, 17 = 86, 17. — 4) *niederlegen, fahrenlassen, aufgeben, von sich stossen*: निनिपाम्यकृममिवं वमसिः प्रथमो भव MBh. 3, 14115.
निनिपत्तवदेषु जनाधिपेषु 1, 7033. निनिपत्तविषयो रामः R. 5, 22, 26. काकः
स्थलचरस्तेनास्मद्विपत्तैर्निनिपतः HIT. 91, 11. — *caus. aufsetzen —, auf
zeichnen lassen*: संशोणितैस्तेन शिलीमुख्यैर्निनिपेताः केतुषु पार्थिवानाम्
— वर्णाः RAGH. 7, 62. — Vgl. निनिपे u. s. w.

— उपनि *niedersetzen*: पाणिभ्यां तूपसंगृह्य स्वयमन्नस्य वार्धितम्। वि-
प्राप्तिके — शनैरुपनिपेत् || M. 3, 224. — Vgl. उपनिपे.

— प्रतिनि *wieder niedersetzen* MBh. 3, 15184.